By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C Madhubani

B.A History (H)
Deg.-I, Paper-II

Date
Page 1

यूरोप में धर्म सुधार आन्दोलन के परिणामों, प्रभावों या महत्व की व्याख्या

(The results of Reformation movement.)

धर्म सुधार आन्दोलन के प्रमुख परिणाम

* 1. ईसाई धर्म की एकता की समाप्ति :- धर्म सुधार आन्दोलन के परिणामस्वरूप ईसाई धर्म की एकता समाप्त हो गयी। मध्यकाल में यूरोप में कैथोलिक चर्च की स्थापना की थी। परन्तु ~~लूथर~~ प्रोटेस्टेण्ट धर्म ने पोप की सर्वोच्चता को मानने से इन्कार कर दिया। इस आन्दोलन के कारण ईसाई धर्म दो सम्प्रदायों में विभाजित हो गया — कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेण्ट। धीरे-धीरे प्रोटेस्टेण्ट धर्म भी अनेक सम्प्रदायों में विभाजित हो गया। इस प्रकार ईसाई धर्म की एकता समाप्त हो गई।

* 2. प्रतिवादात्मक धर्म-सुधार आन्दोलन :- प्रोटेस्टेण्ट धर्म की बढ़ती हुई लोकप्रियता से कैथोलिक धर्म के नेता बड़े चिन्तित हुए। उन्हें भय हुआ कि यदि कैथोलिक चर्च की बुराइयों को दूर नहीं किया गया, तो इस सम्प्रदाय का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। अतः कैथोलिक धर्म के अनुयायियों ने कैथोलिक चर्च में सुधार लाने के लिए आन्दोलन प्रारम्भ किया, जिसे प्रतिवादात्मक धर्म-सुधार आन्दोलन कहते हैं।

* 3. मतभेदों की उत्पत्ति :- धर्म-सुधार आन्दोलन के फलस्वरूप ईसाई धर्म में अनेक सम्प्रदाय बन गये। विभिन्न धार्मिक प्रश्नों पर इन सम्प्रदायों में मतभेद उत्पन्न हो गया। कुछ सम्प्रदाय चर्च की स्वतंत्रता के समर्थक थे तो कुछ सम्प्रदाय चर्च के राज्य पर नियंत्रण करने के पक्षपाती थे।

*4. धार्मिक अत्याचार :- धर्म सुधार आन्दोलन के परिणामस्वरूप विभिन्न सम्प्रदायों के बीच संघर्ष छिड़ गया। कैथोलिक और प्रोटेस्टेण्ट दोनों एक-दूसरे के प्रबल प्रतिद्वन्दी थे। दोनों सम्प्रदाय एक-दूसरे के अस्तित्व को मिटा देने के लिए कटिबद्ध थे। धर्म के नाम पर हजारों लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। प्रोटेस्टेण्ट राजाओं ने कैथोलिक प्रजा पर तथा कैथोलिक राजाओं ने प्रोटेस्टेण्ट प्रजा पर भयंकर अत्याचार किये।

*5. नैतिक विकास :- धर्म सुधार आन्दोलन के फलस्वरूप ईसाई धर्म के सभी सम्प्रदायों चारित्रिक शुद्धता, नैतिकता, सरल जीवन, आचरण की पवित्रता आदि पर बल दिया। अब कर्मकाण्डों के स्थान पर आचरण की शुद्धता पर अधिक जोर दिया जाने लगा। धर्माधिकारियों ने अब आदर्श तथा सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर दिया। पोप ने पाप-मोचन क्षमापत्रों को बेचना बन्द कर दिया। गिरजाघरों में नृत्य बंद कर दिया गया। धर्माधिकारी सांसारिकता से विमुख होकर अपने धार्मिक कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए।

*6. राष्ट्रीय भावना का विकास :- धर्म-सुधार आन्दोलन के परिणामस्वरूप जनता में राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ। राष्ट्रीयता के सिद्धांत के आधार पर सभी देशों ने पोप विरोधी आन्दोलन चलाया। विभिन्न देशों ने राष्ट्रीय चर्च की स्थापना हुई। प्रोटेस्टेण्ट मत को स्वीकार करने वाले राजाओं पर पोप का अब कोई नियंत्रण नहीं रहा।

* 7. राजाओं की शक्ति में वृद्धि :- धर्म-सुधार आन्दोलन के परिणामस्वरूप यूरोप के राजाओं की शक्ति में वृद्धि हुई। पोप के प्रभाव से मुक्त होने के पश्चात राजाओं की शक्ति तथा निरंकुशता में वृद्धि हुई। अनेक प्रोटेस्टेण्ट राजाओं ने अपने राज्यों में राष्ट्रीय चर्च की स्थापना की जिसका सर्वोच्च अधिकारी सम्राट होता था। अनेक प्रोटेस्टेण्ट राजाओं ने चर्च की भूमि पर अधिकार करके अपने शक्ति का विकास किया।

* 8 शिक्षा का विकास :- धर्म-सुधार आन्दोलन के फलस्वरूप शिक्षा का प्रसार हुआ। सभी धार्मिक सम्प्रदायों ने शिक्षा की प्रगति पर जोर दिया। सुधारवादी पोप तथा जेसुइट प्रचारकों ने शिक्षा की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अनेक धर्म सुधारक कैथोलिक धर्म की बुराईयों को दूर करने के लिए शिक्षा के प्रसार पर बल देने लगे। प्रोटेस्टेंट तथा प्यूरिटन धर्म प्रचारकों ने भी शिक्षा के विकास पर बल दिया। उनका यह मानना था कि शिक्षा के विकास से जनता को धार्मिक अन्धविश्वासों से मुक्ति मिल जायेगी।

* 9. बौद्धिक क्रांति :- धर्म-सुधार आन्दोलन के परिणामस्वरूप बौद्धिक क्रांति भी प्रारम्भ हुई। कैथोलिक चर्च विचारों की स्वतंत्रता, विज्ञान, तर्क आदि का विरोधी था। किन्तु धर्म-सुधार आन्दोलन ने अन्धविश्वासों को समाप्त कर दिया। और स्वतंत्र चिन्तन को प्रोत्साहन दिया।

* 10. लोक साहित्य का विकास :- धर्म सुधार आन्दोलन के परिणामस्वरूप लोक साहित्य का विकास हुआ। धर्म सुधारकों ने अपने विचारों एवं धार्मिक सिद्धान्तों का लोकभाषाओं में ही प्रचार किया। बाइबिल का जर्मन तथा अन्य लोक भाषाओं में अनुवाद किया गया।